

三才

पृथा सुदांतान् विनीतान् धुर्यवाहान् रथोद्धहन् क्षमान् ॥ १० ॥

प्रयाणइति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

समद्वित्वलवाहनाः पुनः पुरुषवरणाजिताः स्वर्गाग्रहः ॥ १५ ॥

॥ ४० ॥

[illegible]

विष्णुलिङ्गः पद्मं तपः करुपतु नृपातिराह मद्रूप ॥ ४९ ॥
कण उवाच
भवमुभयवतु । भवान्नरानाश्रितः ॥

मन्त्रपञ्चिन्महेष्टारक्तानि नमस्कृतानि ॥ यादृशह्यातत्त्वाप्यनकणः ॥ ४३ ॥

स्वमुक्त्युत्तव ॥ ४३ ॥
मज्झिमनिकाय ३७॥

निष्पन्नमिन्नान्ममर्गत्वमोघान्मवितायथा ॥ ४४ ॥ ततःप्रायाह्यातमान्वरयनवयाव्रणश्रवणमु

नृश्वतोर्विश्रुतः ॥ नमः नमः नमः ॥ ३७ ॥
॥ ३८ ॥
॥ ३९ ॥
॥ ४० ॥
॥ ४१ ॥
॥ ४२ ॥
॥ ४३ ॥
॥ ४४ ॥
॥ ४५ ॥
॥ ४६ ॥
॥ ४७ ॥
॥ ४८ ॥
॥ ४९ ॥
॥ ५० ॥
॥ ५१ ॥
॥ ५२ ॥
॥ ५३ ॥
॥ ५४ ॥
॥ ५५ ॥
॥ ५६ ॥
॥ ५७ ॥
॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥
॥ ६० ॥
॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥
॥ ६३ ॥
॥ ६४ ॥
॥ ६५ ॥
॥ ६६ ॥
॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥
॥ ६९ ॥
॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥
॥ ७२ ॥
॥ ७३ ॥
॥ ७४ ॥
॥ ७५ ॥
॥ ७६ ॥
॥ ७७ ॥
॥ ७८ ॥
॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥
॥ ८१ ॥
॥ ८२ ॥
॥ ८३ ॥
॥ ८४ ॥
॥ ८५ ॥
॥ ८६ ॥
॥ ८७ ॥
॥ ८८ ॥
॥ ८९ ॥
॥ ९० ॥
॥ ९१ ॥
॥ ९२ ॥
॥ ९३ ॥
॥ ९४ ॥
॥ ९५ ॥
॥ ९६ ॥
॥ ९७ ॥
॥ ९८ ॥
॥ ९९ ॥
॥ १०० ॥

॥ ४५ ॥ इति श्रीमहाभारतकण्वपाणिनकणशिवसंवाद्भागवतपुराणे ॥ ४५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

॥ चतुर्वर्गवत्कृष्णद्वयम् ॥ नित्यं तव ॥ एकैकसमरद्विषया इवाभ्युद्यच्छति ॥ नापि पश्यति ॥ भवंद्रागावांतस्मिन्नेत्येकका

३ ॥ नचत्तदभिमतमन्यतपुरुषानुनदारावान् ॥ रा॥ उप्राणिनाः ॥

॥ ३ ॥ नवतडाभिमभ्यततमङ्गुलमनुः ॥ २ ॥ शङ्खचक्रमनुः ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥

इष्टेनैव नृणां वाचनं ॥ ३ ॥ अन्यवास्मिप नृदया सावर्णहस्तषड्भुव ॥ तथा अस्मिप नृदया सावर्णहस्तषड्भुव ॥ ४ ॥ इन्द्रायाम्निः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नचैन्नदाभिमम्यतपरुषाज्जनदाश्वान्॥ ८॥ तस्मद्द्वारातगागास्तिषन्नागाः॥ ९॥

॥ १०॥

सुदतीश्वर्यवहा॥ सुतान्॥ तवा॥ ३६
॥ शंशतानवशसहसाणि ॥ ३७ ॥ कठ्या

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ श्यामानां अम्रजतिनां । नृकमुनां गुप्यं ॥ ८ ॥ एतानां हृदयतटे

न्यवासावणरथ्यामिशेषः ह।स्तुल्याःपट्टागपडगागानासदो

या सङ्गतां विनीतान् धर्मेवाहान्स्थो ब्रह्मनक्षमाद् ॥ १० ॥